Aug-20 B-3

Aug-20

राजा राम मोहन राय (RAJA RAMMOHAN ROY)

बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी का साम्राज्य जैसे-जैसे धीरे-धीरे स्थापित हो रहा था शैक्षिक एवं प्रशासनिक क्षेत्रों में भी उसका असर दिखने लगा। बहुत सारे बंगाली भद्र पुरुष जन अंग्रेजों के संपर्क में आए और अंग्रेजी साहित्य एवं पाश्चात्य शिक्षा एवं विचारों से धीरे-धीरे प्रभावित हुए। उनके तार्किक एवं वैज्ञानिक सोच पनपी एवं वे प्रबुद्धवर्गों में शामिल हो गए। राजा राम मोहन राय का नाम भी ऐसे ही प्रबुद्ध लोगों में सबसे पहले आता है। H.C. Zakaria ने राजा राम मोहन राय के बारे में लिखा है कि "सभी आधुनिक समाज सुधार आंदोलन - शैक्षणिक, सामाजिक और राजनीतिक सभी की शुरुआत उन्हीं से हुई है और आज भारत में जितने भी समाज सुधारक हैं वे सभी उनके आध्यात्मिक बच्चे हैं।"

राजा राम मोहन राय को भारत के नवजागरण का अग्रदूत तथा सुधार आंदोलनों का पहला नेता कहा जाता है।

राजा राममोहन राय, जिन्हें आमतौर पर 'आधुनिक भारत का पिता' कहा जाता है, का जन्म बंगाल के राधानगर में 1774 ई० में हुआ था। वे एक संपन्न जमींदार लेकिन धार्मिक परिवार में पैदा हुए। उनकी उत्तम शिक्षा की व्यवस्था की गई। उन्होंने संस्कृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी, फ्रेंच, लैटिन, ग्रीक आदि भाषाओं का गहरा अध्ययन किया। उन्होंने समस्त धार्मिक ग्रन्थों का भी अध्ययन किया। वे पाश्चात्य दर्शन से काफी प्रभावित हुए। उन्होंने फारसी, अरबी और मुस्लिम कानून की शिक्षा पटना में हासिल की और संस्कृत एवं हिन्दू शास्त्रों का ज्ञान बनारस में अर्जित किया। 1797 ई० में उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी में नौकरी कर ली। उन्होंने थॉमस वुडफोर्ड के आधीन दीवान की हैसियत से कार्य करना आरंभ किया। बाद में वे डिग्बी के अधीन

काम करने लगे। अकबर द्वितीय (मुगल सम्राट) ने उन्हें 'राजा' की उपाधि से नवाजा और 1830 में उन्हें इंग्लैंड भेजा। 1833 में लंदन के पास एक शहर ब्रिस्टल में उनकी मृत्यु हो गई।

राजा राममोहन राय ने मूर्तिपूजा की आलोचना की, एकेश्वरवाद एवं तर्क पर बल दिया, जाति-प्रथा एवं छुआछूत की निंदा की तथा स्त्रियों की दशा सुधारने एवं शैक्षणिक विकास के लिए प्रयत्न किए। इसके लिए उन्होंने चार तरीके अपनाए :—

1. धार्मिक संस्थाओं की स्थापना
2. पुस्तकों एवं समाचार-पत्रों का प्रकाशन
3. वार्तालाप एवं वाद-विवाद आदि का आयोजन
4. शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना।

(Gift to Monotheists) तोहफात-ए-मुवाहिदीन 'फारसी में' उनकी पहली किताब थी जो 1803 में प्रकाशित हुई। इसमें इस्लाम के प्रभाव और मुताजिला के दर्शन को आसानी से देखा जा सकता है। वे फारसी के महत्वपूर्ण कवि जलालुद्दीन रूमी और हाफिज आदि से बहुत प्रभावित थे। इस्लाम से उन्होंने एकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा का विरोध, सामाजिक समानता, ईश्वर और उसके लोगों के परस्पर संबंध और जीवन जीने का रास्ता आदि अपनाया।

उन्होंने हिब्रू भाषा में बाइबिल और अरबी में कुरान पढ़ी। उन्होंने ईसा मसीह की खूब प्रशंसा की। ~~उनकी किताब उनकी~~ 1820 ई० में उनकी छोटी प्रसिद्ध पुस्तक Precepts of Jesus प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस लंदन से जॉन डिग्बी के प्रयासों से प्रकाशित हुई।

उन्होंने कुछ उपनिषदों का बांग्ला में अनुवाद भी किया। वे उपनिषद थे- कठ, केन, ईश, मुंडक और मांडूक्य (सभी संस्कृत) आदि। उन्होंने गायत्री मंत्र का अनुवाद भी प्रकाशित करवाया।

उन्होंने शंकराचार्य की रचना 'आत्मा, परमात्मा और विवेक' का भी अनुवाद किया।

इन साहित्यिक कार्यों का मुख्य उद्देश्य यह था कि वे एकेश्वरवाद को बढ़ावा देना चाहते थे। उन्हें विश्वास था कि ईश्वर हर जगह है उसका कोई आकार नहीं है।

कलकत्ता में वह डेरोजियो और उसके समर्थकों के संसर्ग में आए। उसके प्रभाव से उन्होंने 1815 ई० में 'आत्मीय सभा' की कलकत्ता में स्थापना की जिसमें धार्मिक विषयों पर चर्चा होती थी ब्रह्म का एकेश्वरवाद एवं वेदांत के संबंध में। उनके सभी साथी-मध्यवर्गीय उच्च घरानों से संबंधित थे। उनमें प्रमुख थे - द्वारिकानाथ टैगोर, प्रसन्न कुमार टैगोर, कालीशंकर घोषाल, वृंदावन मित्र आदि।

ब्रह्म सभा / ब्रह्म समाज :- राजा राम मोहन राय ने 20 अगस्त 1828 में ब्रह्मो सभा का गठन किया। 1829 ई० में उसी का नाम बदलकर ब्रह्म समाज हो गया। ब्रह्म समाज ने विश्वव्यापी ईश्वर की उपासना पर बल दिया। 1830 ई० में कलकत्ता में इस समाज के लिए एक अलग भवन खरीदा गया। ब्रह्म समाज का उद्देश्य 'शाश्वत सर्वाधार अपरिवर्त्य ईश्वर की पूजा थी' जो सारे विश्व का कर्ता और रक्षक है। समाज के भवन का उपयोग सिर्फ निराकार ब्रह्म की उपासना के लिए ही किया जा सकता था। इस भवन में किसी प्रकार की मूर्ति की स्थापना या बलि चढ़ाने पर पाबंदी लगायी गई थी। नए धर्म का कोई धर्मग्रंथ नहीं था और न ही राममोहन राय ने कभी यह दावा किया कि वे हिंदू धर्म से अलग कोई नया धर्म स्थापित कर रहे हैं। वस्तुतः इसका मुख्य उद्देश्य मूर्तिपूजा, बलि-प्रथा, पुरोहितों के आधिपत्य और धार्मिक आडंबरों एवं रूढ़ियों को समाप्त करना था। राममोहन राय पुनर्जन्म के सिद्धांत में भी विश्वास नहीं रखते थे। इस संस्था का बंगाल के प्रबुद्धवर्ग द्वारा स्वागत किया गया और अनेक व्यक्ति इसके सदस्य बने। इस संस्था द्वारा राममोहन राय ने हिंदू धर्म में प्रविष्ट कुरीतियों को दूर करने एवं ईसाई

धर्म के बढ़ते प्रभाव के समक्ष हिंदूधर्म को शुद्ध रूप में पेश करने की कोशिश की।

सामाजिक सुधार – राममोहन रॉय ने समाजसुधार की दिशा में भी महत्त्वपूर्ण कदम उठाए। इस दिशा में उनका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य था सदियों से चली आ रही अमानवीय सती-प्रथा के विरुद्ध आंदोलन प्रारंभ करना। 1818 ई० से उन्होंने इस प्रथा के विरुद्ध संघर्ष आरंभ किया। उन्होंने शास्त्रों का सहारा लेकर यह दर्शाने की कोशिश की कि धर्मशास्त्रों में भी सती-प्रथा का विरोध किया गया था। उन्होंने स्त्रियों के प्रति मानवता और दया की भावना उभारने का भी प्रयास किया। उन्होंने व्यक्तिगत प्रयासों द्वारा इस प्रथा को रोकने की चेष्टा की तथा गवर्नर जनरल विलियम बेंटिंक को अपना पूर्ण सहयोग दिया। परिणामस्वरूप, 1829 ई० में एक कानून द्वारा इस प्रथा को समाप्त कर दिया गया।

उन्होंने ~~बहुविवाह~~ बहु-विवाह समाप्त करने, विधवाओं की दशा सुधारने, वेश्यावृत्ति को समाप्त करने, स्त्रियों को शिक्षा दिलवाने तथा उन्हें संपत्ति में अधिकार दिलवाने का भी प्रयास किया। वे छुआछूत और जाति-प्रथा को भी समाप्त करना चाहते थे। इस उद्देश्य से उन्होंने अन्तर्जातीय विवाहों का समर्थन किया। उनके इन कार्यों में ब्राह्मसमाज ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

शिक्षा एवं साहित्य में योगदान :- राजा राममोहन राय का यह मानना था कि भारतीय समाज को आधुनिक बनाने के लिए ~~उनका~~ उन्हें पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान से परिचित कराना होगा। इसके लिए उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार का समर्थन किया। डेविड हेयर को सहयोग देकर उन्होंने 1817 ई० में कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना करवाई। उन्होंने अपने खर्चे से एक अंग्रेजी स्कूल भी 1817 ई० में ही कलकत्ता में स्थापित किया। उन्होंने कलकत्ता में एक वेदांत कॉलेज भी स्थापित करवाया जहाँ पाश्चात्य दर्शन के साथ-साथ भारतीय विद्या भी पढ़ाई जाती थी।

उन्होंने अंग्रेजी के साथ-साथ स्थानीय भाषा के विकास में भी

योगदान दिया। उन्होंने बांग्ला साहित्य को भी समृद्ध किया। वेदांत और उपनिषदों का उन्होंने बांग्ला में अनुवाद किया। उन्होंने एक बांग्ला व्याकरण की भी रचना की। उन्होंने अंग्रेजी फारसी और संस्कृत के अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का भी बांग्ला में अनुवाद करवाया।

पत्रकारिता - राम मोहन राय भारतीय पत्रकारिता के भी अग्रदूत थे। उन्होंने स्वयं बंगाली पत्रिका 'संवाद कौमुदी' का प्रकाशन किया (1821 ई०)। 1822 ई० में 'मिरातुल अखबार' (फारसी) का प्रकाशन किया। 1829 ई० में हिन्दी में 'बंगदूत' नामक समाचार पत्र निकाला।

राजनीतिक दर्शन - राजा राममोहन राय देश की राष्ट्रीय चेतना एवं एकता के लिए भी चिंतित रहते थे। उन्होंने बंगाल के किसानों को भूस्वामियों के अत्याचारों से मुक्त करने, किसानों के लिए लगान की राशि तय करने, ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक अधिकारों को समाप्त करने, भारतीय वस्तुओं पर से निर्यात शुल्क कम करने, उच्च सेवाओं के भारतीयकरण, न्यायिक स्वतंत्रता एवं समानता, मुकदमों की सुनवाई के लिए जूरी की व्यवस्था, प्रेस की स्वतंत्रता एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता और समानता जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नों को उठाया। उन्होंने अपने देशवासियों में राजनीतिक जागरण पैदा करने का भी प्रयास किया।

अंतर्राष्ट्रीयता :- राममोहन राय अंतर्राष्ट्रीयता के समर्थक थे। वे विभिन्न राष्ट्रों के बीच मुक्त सहयोग के विचार के हिमायती थे। भारत में रहते हुए भी उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं में भरपूर दिलचस्पी ली। उन्होंने विश्व में हो रहे अनेक जगह स्वतंत्रता, जनतंत्र और राष्ट्रीयता के आंदोलन का समर्थन किया।
1821 ई० में नेपल्स क्रांति की विफलता से वे अत्यंत ही दुःखी एवं उद्वेलित हुए। इसी प्रकार स्पेनिश अमेरिका की क्रांति की सफलता (1823 ई०) से वे अत्यंत हर्षित हुए।

इस तरह राजा राममोहन राय भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत एवं आधुनिक भारत के निर्माता कहे जा सकते हैं। यद्यपि अनेक विद्वान इस मत से असहमत हैं। उन्होंने धार्मिक रूढ़ियों और सामाजिक कुप्रथाओं के विरुद्ध कड़ा संघर्ष किया। अनेक प्रतिरोधों के बावजूद अपने प्रयासों में वे कुछ हद तक जरूर सफल रहे। उनके कार्यों का मूल्यांकन करते हुए प्रो० बिपनचन्द्र ने उन्हें "उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारतीय आकाश के सबसे चमकीले सितारे" के रूप में स्वीकारा है।

MD. SHNAM
ASST PROF HISTORY
L.S.C